ब्रह्म विद्या, गीता अध्याय १५, श्लोक, १, ईश्वर, सृष्टि और ज्ञान.

श्री भगवानु वाच.

ऊर्ध्व मूलमधःशाखम श्वत्थं प्राहु रव्ययम् ,

छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् .

इस श्लोक का संधि सहित शब्दों का अर्थ इस प्रकार है.

ऊधर्व मूलम् अर्थात जड़ें ऊपर की ओर, व निर्माण उद्गम का शीर्ष पर स्थित होना.

अधः शाखम् अर्थात नीचे की ओर शाखाएँ.

अश्वत्थम् अर्थात अश्वत्थम् का अर्थ है कि, वह वस्तु जो कभी एक स्तिथि में स्थित नहीं रहती, अथवा लगातार बदलती रहती है. पीपल के पवित्र वृक्ष का नाम भी अश्वथ कहा गया है.

प्राहु: अर्थात कहा गया है.

अव्ययम् अर्थात शाश्वत.

छन्दांसि अर्थात वैदिक मंत्र,

पर्णानि अर्थात पत्ते,

वेद वित् अर्थात वेदों का ज्ञाता.

सांख्य व वेदांत दृष्टि से पारमार्थिक भावार्थ.

ऊधर्व मूलम्, ऊर्ध्व का अर्थ है श्रेष्ठ, ऊपर, धर्म के परिपेक्ष में इसका अर्थ गोलोक, मोक्ष अथवा मुक्ति का द्वार कहा जाता है. उदाहरणतः ऊर्ध्व गति अर्थात स्वर्गारोहण. यहां ईश्वर ने ऊर्ध्व शब्द को द्वी आर्थि शब्द के रूप में किया है. द्वी आर्थि का अर्थ है जिस शब्द के दो तरह से अर्थ निकाले जा सकते हैं.

उदाहरणतः एक वाक्य है. ईश्वर है. इसके दो अर्थ हुए कि.

१. केवल ईश्वर ही है, बाकी और कुछ नहीं है. वाक्य के इस अर्थ से सारे उपनिषदों का ज्ञान प्रकट हुआ.

२ ईश्वर है अर्थात ईश्वर है, और जीव भी है और ईश्वर ही जीव का पालनकर्ता, जीव के सजीव शरीर के निर्माण पालना और विध्वंस, अर्थात सबका कर्ता है. वाक्य का यह अर्थ साकाम भक्ति के जगत के

उत्थान का आधार बना और अनंत रूप साकाम भक्ति का प्रार्दुर्भाव हुआ. इसी भक्ति के कारण, ईश्वर की सभी कथाओं, त्योहारों, कीर्तन, तीर्थ यात्रा, व्रत, प्रवचनों, मठों, देवालयों आदि, का जगत में अवतरण हुआ और जगत में उल्लास का वातावरण बना.

यहां ऊधर्व शब्द का एक अर्थ है, सबसे ऊपर, शीर्ष में.

दूसरा अर्थ है, उद्गम स्थल, सबसे पहला, जहां से सृष्टि की उप्तत्ति पलना और विनाश तीनो नियंत्रित होते हैं, वहाँ मैं हूँ. अर्थात मुझसे ही यह सृष्टि उत्पन्न हुई है, मैं ही इस पूरी सृष्टि, अर्थात सजीव शरीर सहित, की पालना करता हूँ और यह सृष्टि मुझे में ही विलीन होती है.

मूल का अर्थ है, जहां से स्थूल सृष्टि व सूक्ष्म प्राणमय सृष्टि की उत्पत्ति प्रारम्भ होती है. ईश्वर उस मूल से भी पहले प्रकट हुए और उनकी इच्छा से अव्यक्त प्रकृति सृष्टि के रूप में व्यक्त हो गई. वह अव्यक्त ही मूल है, इस जड़ सृष्टि का. उसी को ईश्वर और माया का युग्म रूप भी कहते हैं. अर्थात उस बिन्दु पर माया भी अव्यक्त थी और ईश्वर भी अव्यक्त थे. ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से कभी व्यक्त नहीं होते, जैसे कुम्हार कभी घड़े में प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त नहीं होता. तत्त्व अथवा समझने की बात यह है कि, यदि घड़ा बना है, तो किसी कुम्हार ने ही बनाया होगा, इस तरह कुम्हार अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त हो गया. इसी तरह इस सृष्टि में ईश्वर भी अप्रत्यक्ष रूप से ही व्यक्त होते हैं.

सृष्टि असत रूप है, स्थूल है जड़ है, अलग अलग उपनिषदों ने सृष्टि को अलग अलग ढंग से समझाया हुआ है.

कुछ का मत है कि सृष्टि है ही नहीं, यह विवर्त रूप में दृश्टिगत तो हो रही है, लेकिन सत्य यह है कि केवल ईश्वर है. माया, जीव व ईश्वर के बीच एक धुंधलके अथवा प्रकाश को रोकने वाली मेघ रुपी एक दिवार के रूप में आ कर, हल्का अंधकार कर दिया और सत्य रुपी ईश्वर की जगह यह असत सृष्टि दृष्टिगत हो गई. जैसे कि एक अँधेरे कमरे में हमको कोई भी वस्तु स्थिर नहीं दिखाई पड़ती. हर वस्तु हिलती हुई और अस्पष्ट दिखाई पड़ती है. यदि वहाँ पड़ी किसी भी वस्तु को ध्यान से देखने की कोशिश करें, और हमको ज्ञान भी हो कि, वह एक दीवार पर टंगी चौकोर घडी अथवा कोई चित्र है, तो भी वह हमको हिलती व अपने रूप जैसे लम्बाई, चौड़ाई, आदि बदलती हुई प्रतीत होती है. कभी कभी तो बिलकुल विलुप्त हो कर फिर आभासित होने लगती है और उस वस्तु का ज्ञान होते हुए भी हम कुछ पल के लिए असमंजस में पड़ जाते हैं, और निश्चित भी नहीं हो पाते कि उस घडी या चित्र की परिधि या परिमाप कहाँ तक है. इसी तरह यदि वहाँ एक रस्सी पड़ी हो, वह भी सांप की भाँती हिलती डुलती चलती हुई प्रतीत होती है.

अब इसी प्रत्यक्ष जानकारी को, हम विवेक से, सत अर्थात ईश्वर और, असत अर्थात सृष्टि की विवेचना व विचार करें.

रस्सी में दिखता हुआ सर्प असत रूप है, वह सत्य नहीं है, और उसकी उत्पत्ति माया के तमोगुण की वजह से हुई है. तमोगुण अर्थात जो सत्य है, वह नहीं दिखाई देगा, लेकिन वह दिखाई देगा जो वहाँ है ही नहीं. जैसे एक जादूगर अपने हाथ घुमा कर हवा में ही कई वस्तुऐं धन आदि प्रकट कर देता है, ठीक वैसे ही माया अपने अँधेरे से रस्सी में सांप दिखा देती है, जो वहाँ है ही नहीं. यदि वहाँ रस्सी ही ना हो तो क्या सांप प्रकट हो सकता है और यदि वहाँ अँधेरा भी न हो, अर्थात पूरा कमरा प्रकाशित हो, तो क्या सांप प्रकट हो सकता है. उत्तर है नहीं, बिना रस्सी और अन्धकार के सांप प्रकट नहीं हो सकता.

इस तरह क्या रस्सी, सांप की जननी हुई? अथवा क्या रस्सी, सांप का मूल अथवा जड़ है? अथवा क्या सांप उस रस्सी की देन है?.

सत्य रूप से नहीं, लेकिन असत रूप से, अर्थात जिस ज्ञान के आधार पर यह संसार सत्य है, उस ज्ञान के अनुसार रस्सी ने सांप को जन्म दिया है, रस्सी ही सांप रुपी वृक्ष का मूल है, रस्सी ही कुछ देर के लिए सांप में परिवर्तित हो गई और फिर जब प्रकाश किया, तो सांप वापस रस्सी में वापस बदल गया.

ईश्वर द्वारा प्रयुक्त शब्द, मूल, के ज्ञान के लिए अब एक दूसरे दृष्टान्त को लेते हैं.

एक गाँव में एक बहुत शरारती बच्चा रहता था. उसकी प्रतिभा का लोहा आस पास के सभी गाँव वाले मानते थे. वह न केवल पढ़ाई लिखाई को लेकर, बल्कि अपनी शरारतों को लेकर भी बहुत प्रसिद्द था. कभी किसी गाय के बछिया को खूंटे से खोल कर भाग जाता, और बछिया अपनी माँ से सारा दूध ग्रहण कर लेती, ग्वाले के लिए कुछ नहीं बचता. इस तरह की शरारतें वह अपने घर में भी करता. कभी मोमबत्ती की छाया से कोई जानवर बना कर अपनी छोटी बहन को डरता, कभी अपने घर के पालतू कुते के शरीर को मेहँदी से रंग कर उसे बाघ की तरह बना देता. स्कूल से आते हुए भी, वह कभी एक रास्ता नहीं चुनता, हमेशा जंगल से कोई नया रास्ता ढून्ढ कर घर आता. सभी उसकी अजीबो गरीब आदतों से हैरान रहते.

एक दिन वह अपने स्कूल से घर आ रहा था, तो जंगल के थोड़ा दूर निकल गया. वहां उसने देखा कि कुछ लोग इक्कठा हो कर बहुत धीरे धीरे बात कर रहे हैं. वह भी चुपके से उनके नज़दीक जा कर उनकी बात सुनने लगा. तो उसे पता चला कि वह चोरों का समूह है और उसी के गावों में आज रात चोरी की योजना बना रहा है. वह चुपके से वहाँ से खिसक गया और गावों पहुंच कर अपने मुखिया को यह बात बताई. उसकी बात किसी ने सत्य नहीं मानी.

अब उसे चिंता होने लगी कि कैसे उन चोरों को भगाया जाए. उसने एक योजना बनाई और उस पर काम करने लग गया. शाम होने के बाद, उसने गावों के कुत्तों को अपने घर के पास खाना दिया, और उनको वहाँ ही रख लिया. अब उसे इंतज़ार था उन चोरों का. आधी रात के आस पास उसे दूर से कुछ कुत्तों के भौंकने के आवाज़ आई, वह समझ गया कि चोर आ रहे हैं. जब चोर उनके गॉवों में दाखिल हुए, तो उसने अपने घर की सामने के घर की दीवार की तरफ एक हलकी से टोर्च जलाई और उस टोर्च की रौशनी में अपने हाथों की अँगुलियों से बाघ जैसा जानवर बनाया कि जैसे कोई बाघ भाग रहा हो और उसकी छाया उस दीवार पर पड़ रही हो. उस छाया को देख कर सारे कुत्ते जोर जोर से भोंकने लगे. चोरों ने भी बाघ की छाया को भागते देखा, और डर के मारे वह वहाँ से भाग गए. गावों वाले भी तब तक जाग गए और उन्होंने भी चोरों को भागते देखा, और उस बच्चे की सराहना करने लगे.

अब इस कथा के तत्त्व पर थोड़ा ध्यान देते हैं. वह बाघ, जिसकी छाया देख कर चोर भाग गए, क्या उस बाघ की जननी जन्मदाता अथवा मूल,

(१) वह टॉर्च थी, जिसकी ऊर्जा अथवा प्रकाश से बाघ की छाया प्रकट हुई?

(२) क्या बाघ का मूल, उस बालक की अंगुलिया थी, जिनसे बाघ की छाया बनी?

(३) क्या वह बालक उस बाघ का मूल था, जिसने उस बाघ को दिखाने के बारे में सोचा और उसको छाया से दिखा दिया?

उत्तर है कि, वह सत रुपी बालक ही उस बाघ का मूल था, उस असत बाघ का, जो बाघ कभी था ही नहीं. इस सारे प्रकरण में, केवल वह बालक ही मूल चेतन तत्त्व है, बाकी दिवार, टॉर्च, बालक की अंगुलिया आदि सब जड़ हैं, और ज्ञान, इच्छा और कर्म केवल बालक के पास ही था. इसलिए बालक ही मूल था. गृहे तिष्ठति मूलं, अथवा मूल तो घर में बैठी हुई है, और जगत उसके कार्य से भरा हुआ है.

इसी तरह ईश्वर भी इस जगत का मूल हैं, वही सबसे पहले आया, उसी से यह सब सृष्टि निर्मित हुई और वही सबसे ऊपर स्थित है. श्रीमद भागवत महापुराण के चतुश्लोकी भगवत में भी ईश्वर ने है बताया है कि,

अहमेव आसमेवाग्रे नान्यद यत् सदसत परम, अर्थात मैं ही सबसे आगे, यहां आगे का अर्थ है सबसे पहले या जब कोई नहीं था तो मैं ही था, मैं ही अंत में शेष रहूंगा और सत या असत, मेरे सिवाय यहाँ कुछ भी नहीं है, मैं ही परम हूँ. अर्थात में ही इस सृष्टि का मूल हूँ और मैं ही अंत में बीज रूप में भी रहूंगा

इस तरह से माया और ईश्वर के सम्बन्ध और उत्पत्ति का ज्ञान कराने के लिए, कई दृष्टान्त हैं. वैसे ईश्वर को जान पाना असंभव है, मन और बुद्धि वहां तक पहुँच ही नहीं सकती, लेकिन फिर भी हमको जानना चाहिए, जानने की कोशिश करनी चाहिए और यह कोशिश करनी ही पड़ेगी. इसलिए एक दृष्टान्त, जो ईश्वर और सृष्टि के सम्बन्ध को जानने हेतु, इस जगत के ज्ञान की कसौटी पर सबसे सटीक है, वह दृष्टान्त स्वप्न और स्वप्न दृष्टा का है.

हम सब निद्रा में स्वप्न देखते हैं, अथवा किसी कथा को सुनते सुनते उसे अपने मन में चलचित्र की भाँती देख भी लेते हैं. निद्रा में तो स्वप्न बिलकुल सत्य भी भान पड़ते हैं.

एक बार एक राजा ने स्वप्न देखा कि उसके राज्य में अचानक तूफ़ान, बाढ़ भूकंप और अग्नि का तांडव होने लगा, सारा कोष, महारानी, युवराज आदि सब कुछ बह कर पडोसी राज्य की तरफ बह कर जाने लगे. राजा सोते सोते जोर से चिल्लाया बचाओ. राजा जी आवाज सुन कर सुरक्षा सैनिक दौड़ा दौड़ा आया, तब तक राजा की नींद भी टूट गई. उसने देखा सब ठीक है और बहुत प्रसन्न हुआ. उसने यह भी देखा कि सैनिक पास खड़ा है, उसे देख कर राजा मुस्कुराने लगा. बोला कुछ नहीं, बस में यह देख रहा था कि सब चौकन्ने हैं.

अब तत्त्व दृष्टि से विचार करें, क्या वह सृष्टि जो राजा के स्वप्न में थी, उसका मूल अर्थात उसकी रचना करने वाला कौन था? इड़ा नाड़ी जो सारे स्वपन व विचारों को दृशयमान रूप से कल्पना में रच देती है और जीव को दिखा भी देती है. क्या राजा के अंतर मष्तिष्क में स्थित वही इड़ा नाड़ी उस स्वपन का मूल है? क्या राजा स्वयं, जो कि सत चेतन रूप है, वह स्वयं, अपने स्वप्न की सृष्टि का मूल है, और उस राजा के अंश में ही वह सृष्टि स्वप्न में प्रकट हुई?

उत्तर है, हाँ, स्वप्न में निर्मित अथवा प्रकट सृष्टि का मूल, वह राजा स्वयं है, और वह सृष्टि उस राजा के अंश से ही प्रकट हुई थी.

ठीक इसी तरह, यह सृष्टि भी सत रूप ईश्वर के, असत रूप स्वप्न में प्रकट हुई है, और ईश्वर ही इस सृष्टि का मूल है. ईश्वर ही इस सृष्टि से पहले भी थे, इसलिए वह इस सृष्टि में प्रथम हैं, सृष्टि के शीर्ष अथवा उर्ध्वा पर स्थापित हैं. मूल शब्द का अर्थ न केवल जड़ है बल्कि उससे पहले कि स्तिथि भी जड़ ही कही जाती है अर्थात जड़ शभ के अर्थ के अंतर्गत ही आती है.

इस तरह ईश्वर के ऊर्ध्व मूल होने का अर्थ स्पष्ट हुआ, की ईश्वर ने अपने को इस सृष्टि का उर्ध्वा मूलं के रूप में किस आधार पर स्थापित किया है. आप भी चिंतन में ईश्वर और सृष्टि की उत्पत्ति को ध्यान में रख कर श्लोक के आगे के हिस्सों के अध्ययन पर ध्यान देना.

अधः शाखम् अर्थात नीचे की ओर शाखाएँ, अर्थात इस की शाखाये नीचे की तरफ जा रही हैं. यहां शाखा का अर्थ पेड़ के तने व तने से निकलती हुई शाखाओं से भी है.

ईश्वर ने यहां उस सृष्टि के बारे में बताया जो उनके चेतन तत्त्व से आगे बड़ कर चेतन शरीरों की रचना करती है.

जो जड़ सृष्टि है, वह पांच महा भूतों से, काल के प्रभाव में आकर, अपने रूपों को प्राप्त हुई. जैसे जल के बह कर इकठ्ठा होने से तालाब, झील, सागर आदि बन जाते हैं, उसी तरह पर्वत आदि का भी निर्माण होता है. इसमें ईश्वर के चेतन तत्त्व की आवश्यकता नहीं रहती.

ईश्वर ने कहा कि मुझसे अर्थात मूल से जो तना शाखाएं आदि निकली, वह मुख्य तना अर्थात ब्रह्मा जी, हुए और मुख्य तने से जो शाखाये निकली वह अलग अलग तरह के स्थूल देह धारी जीव हैं, जो ब्रह्मा जी से ही निकल रहे हैं, अथवा उनका अंश हैं. स्थूल देह अर्थात दानव, मानव, देव, पशु, पक्षी आदि. वे सब मुझे, उर्ध्व स्थल से निकल कर अधः गति अर्थात नीचे की तरफ गति कर रहे हैं अर्थात बढ़ रहे हैं. जीव के व्यष्टि रूप को आत्मा व सूक्षम शरीर कहते हैं और सभी सूक्षम शरीरों को मिला कर एक समष्टि शरीर बनाएं तो उसे सूत्रात्मा अथवा ब्रह्मा जी कहते हैं. यही सूक्ष्म शरीर, ईश्वर द्वारा निर्मित, सभी स्थूल देहों शरीरों को चालयमान अथवा सजीव बनाते हैं.

यदि एक बूँद को यदि बादल से मिलना हो तो पहले वह सागर से मिले कर सागर का ही रूप लेगी फिर सूर्य की ऊष्मा पर चढ़ कर बादल से मिल सकती है. ठीक इसी तरह बिना तने से गुजरे, पेड़ का कोई भी अंश, मूल तक नहीं पहुंच सकता और ना ही मूल से सृष्टि में आ सकता है.

अश्वथंम प्राहुर व्ययम्.

अश्ववत्थं का अर्थ है जो कभी एक स्तिथि में स्वाभाविक रूप से न रह सके अथवा जो लगातार परवर्तित होता रहे अथवा जो किसी भी दो क्षणों में एक स्तिथि में न हो.

प्राहुरव्व्यम का अर्थ है जो हमेशा रहे या जो शाश्वत हो, जिसमे किसी भी तरह का क्षय आदि न हो.

माया के तीन रूप हैं, माया, प्रकृति और शक्ति. यह तीनो ही रूप अव्यक्त हैं, अर्थात सृष्टि की रचना के पहले माया दृश्यमान नहीं थी, तब सृष्टि भी नहीं थी. सृष्टि की रचना के लिए सामग्री चाहिए थी, और वह सामग्री माया के प्रकृति रूप से प्राप्त हुई. सृष्टि की रचना के लिए शक्ति की जरूरत हुई, की ब्रह्मांडो, सूर्यों ग्रहो आदि का निर्माण हो सके. वह शक्ति माया के शक्ति रूप से मिली. और जो भी रचना हुई वह दृश्यमान हो गई, इसी का नाम माया है. सृष्टि की रचना, माया के इन्ही तीनो रूपों से हुई

है, सृष्टि की उत्पत्ति के साथ माया भी व्यक्त हो गई. जगत की रचना इसी माया के पांच महा भूतों से हुई है. अर्थात माया के पांच महा भूत ही इस सृष्टि का उपादान कारण है. यह जगत लगातार निर्मित और विध्वंस को प्राप्त हो रहा है, पूरा जगत किसी भी क्षण रुकता नहीं है, हमेशा ही इसमें नए ग्रहों, ब्रहमांडो, अनंत सूर्यों, की रचना होती रहती है और इसी तरह कई गृह, कई ब्रहमाण्ड और सूर्य नष्ट होते रहते हैं उन्ही से ही नए ब्रहमांडो आदि कर निर्माण होता है. यहां सूर्य का अर्थ तारों से है. लेकिन माया का ना तो नाश होता है ना ही उसकी उत्पत्ति होती है. इसलिए माया क्ष्यहीन है, उसे किसी तरह की हानि अथवा लाभ नहीं होता, अर्थात पांच महा भूतों नष्ट नहीं होते, पांच महा भूतों से बने गृह, ब्रहमाण्ड आदि नष्ट होते रहते हैं.

यह ठीक वैसे ही है जैसे एक सागर में लहरे लगातार बनती रहती हैं और लगातार नष्ट हो कर वापस सागर में लय हो जाती हैं. यदि सहस्त्रों लहर बने, तो क्या सागर को कोई कष्ट या सागर का कोई नुकसान अथवा क्या सागर का कोई क्षय होता है? यदि सागर की सहस्त्रों लहरे सागर में मिल जाए तो क्या सागर का स्तर बढ़ जाता है? क्या सागर और विशाल हो जाता है?

सागर से कई सारी बूंदे सूर्य की ऊष्मा में चढ़ कर आकाश में मेघों का निर्माण करती है, और फिर वर्षा के रूप में वापस धरती पर आती हैं. क्या जब जल सागर से मेघों में गया तो पृथ्वी से जल कम हो गया? जब वर्षा बन कर वापस पृथ्वी में आया, तो क्या पृथ्वी में जल की मात्रा बढ़ गई?

पृथ्वी में अनंत वनस्पतियां लगातार उगती है, अनंत पेड़ व पौधे उगते हैं, और अनंत पेड़ व पौधे नष्ट हो कर या तो किसी कार्य में स्थापित हो जाते हैं या भस्म हो जाते हैं या वही सड़ गल कर माटी में मिल जाते हैं.

क्या इस से पृथ्वी का कोई क्षय हुआ. पौधा अथवा वनस्पति अथवा पेड़ सभी इस पृथ्वी में उत्पन्न हुए, उन्होंने कोई भी तत्त्व अथवा निर्माण सामग्री ,पृथ्वी के बाहर से नहीं ली, उनका जो भी विकास आदि हुआ पृथ्वी के ही तत्त्वों जैसे रसायन, वायु, जल आदि से हुआ, और जब वे नष्ट हुए तो सब वापस पृथ्वी में अथवा पृथ्वी के वायुमंडल में समा गए. जो हिस्सा, जिस पांच महाभूत का था, उसी में ही उसका लय अथवा विलय हो गया.

अर्थात पृथ्वी को किसी तरह की हानि और किसी तरह का लाभ नहीं हुआ. लेकिन माया की प्रकृति के अनुसार वह लगातार पृथ्वी परिवर्तन की अवस्था में रही और परिवर्तित होती रहती है, अर्थात निर्माण व नाश हो कर पुनः निर्माण और पुनः नाश भी होता रहा. पांच महा भूतों की संख्या व मात्रा आदि में कोई परिवर्तन नहीं आता. पंचमहाभूत शाश्वत हैं, जब पृथ्वी भी नष्ट हो जायेगी तो पांच महा भूत ब्रहमाण्ड के पांच महा भूतों में मिल जाएंगे. जहां से वह आये और इस पृथ्वी का निर्माण किया.

इसी तरह ब्रह्माण्ड भी एक दूसरे से टकरा कर नष्ट होते रहते हैं और उनके पांच महा भूत सृष्टि के पांच महाभूतों में मिल जाते हैं. इसी तरह नए ब्रह्मांडो आदि का निर्माण भी उन्ही पांच महाभूतों से होता रहता है.

अब तत्त्व विचार की बात यह है कि, ब्रह्मांडो के नष्ट होने या बनने में, सृष्टि के किसी तत्त्व का क्षय अथवा निर्माण होता है. उत्तर है नहीं, जो पांच महाभूत जिस मात्रा में सृष्टि के समय थे, वही पांच महाभूत उसी मात्रा में आज भी हैं. जब तक सृष्टि रहेगी तब तक यही पांच महा भूत बिना किसी क्षय और लाभ के इस सृष्टि में यथावत रहेंगे. अर्थात यह पांच महाभूत अक्षय हैं, अर्थात शाश्वत हैं. बस इनके कार्य का रूप लगातार बनता परिवर्तित होता या निर्मित व नष्ट होता रहता है. कार्य का अर्थ है जो भी निर्मित हुआ वह कार्य है.

ब्रह्मो अव्यक्तं, अव्यक्तात महत्त , महत्तो अहंकारानी, अहंकारत पांच महा भूतानि, पांच महा भूतानि अखिलं जगत.

अहंकारानी का तात्पर्य यहां अहम् तत्त्व से है, अर्थात समष्टि मन.

सृष्टि की रचना की दो पहलू हैं, एक है जड़ सृष्टि जैसे, पत्थर, पर्वत, झील, अग्नि आदि. और दूसरा पहलू हैं सूक्ष्म शरीर अथवा जीव, जो स्थूल सजीव शरीरों को चलायमान बनाते हैं.

महत्त तत्त्व को ही ब्रह्मा जी बोला गया है, यही सभी सूक्ष्म शरीरों का समष्टि रूप है. अर्थात एक एक कर के अलग अलग देखें तो सूक्ष्म शरीर कहे जाएगा, और सभी को मिला दिया जाए तो वह महत तत्त्व अथवा ब्रह्मा जी अथवा सूत्रात्मा कहा जाएगा. ब्रह्मा जी ईश्वर और माया के सतगुणी अंश का युग्म है, अर्थात स्वयं परमात्मा हैं, और इनका भी न तो आदि है और ना ही अंत. छह अनादियों में ब्रह्मा जी भी एक है.

एक दृष्टान्त है कि एक एक बूँद से मिल कर महासागर बना अथवा हर बूँद महासागर का ही अंश है. इसलिए बूंदो को अलग अलग मानो या एक मानो, महासागर पर इसका कोई असर नहीं होता.

इसी तरह अनंत सूक्ष्म शरीरों को अलग अलग होना अथवा तत्त्व रूप से एक रूप में दिखना, इसमें कोई अंतर नहीं पड़ता.

ईश्वर को नारायण कहा जाता है, नारायण का अर्थ है जहां से नरों की उत्पत्ति हो अर्थात सभी नर जिसके अंश हों, वह नारायण है. नर अर्थात एक नर, नारा अर्थात बहु वचन बहुत सारे नर, अयन का अर्थ है अधिष्ठान अर्थात जहां से कार्य का निर्माण होता है, अर्थात जहां से सभी नरों की उप्तत्ति होगी.

एक दृष्टान्त है. एक बार एक व्यक्ति को राजा के मंत्री ने एक द्वार ठीक से रंग करने के लिए बुलाया. वह द्वार एक राजा के शीश महल के सबसे बड़े कक्ष का था. जब वह उस द्वार के पास पंहुचा तो उसने

देखा सहस्त्रों छोटे छोटे दर्पण सारी दीवारों छत आदि पर लगे हुए हैं और उसमे उस व्यक्ति का प्रतिबिम्ब आ रहा है. वह देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया और प्रसन्न भी हो गया. थोड़ी दिनों में उस व्यक्ति ने उस कक्ष के सारे द्वारों में रंग कर, मंत्री जी को कार्य ख़त्म होने की सूचन दी, ताकि मंत्री जी उसके किये कार्य का निरीक्षण कर लें और उसे अपनी तय किया भुगतान मिल सके. मंत्री जी ने देखा काम तो बहुत अच्छा किया था, तब मंत्री जी ने बोला, की आपने बहुत अच्छा कार्य किया है, अब आप दुसरे कक्ष के द्वार भी रंग दें, आपको उसका भी भुगतान अलग से कर दिया जाएगा.

व्यक्ति खुश हो गया कि काम भी मिल गया और नए तरह के दर्पण भी देखने को मिलेंगे. मंत्री जी उस व्यक्ति को दूसरे कक्ष में ले कर गए, वहां एक पूरी बड़ी दीवार ही दर्पण की बनी थी.

वह अंदर गया उसने अपना प्रतिबिम्ब उस दर्पण में देखा, बहुत साफ़ और बिना किसी त्रुटि के दर्पण में प्रतिबिंब बन रहा था. एक दर्पण का अर्थ केवल एक ही प्रतिबिम्ब बनेगा. अपने साफ़ प्रतिबिम्ब को देख कर वह व्यक्ति मुस्कुराया और अपने काम पर लग गया.

अब तत्त्व से विचार करने का बिन्दु यह है कि, जब सहस्त्रों दर्पणों में उस व्यक्ति का प्रतिबिम्ब बना और जब एक बहुत बड़े दर्पण में व्यक्ति का एक ही प्रतिबिम्ब बना, तो क्या इसका उस व्यक्ति पर कोई प्रभाव पड़ा, अर्थात क्या वह व्यक्ति, जब कई प्रतिबिम्बों का बिम्ब था तो क्या वह व्यक्ति छोटा अथवा क्षय हो गया था, और जब केवल एक ही प्रतिबिम्ब बना तो क्या वह व्यक्ति कुछ कम क्षय हुआ. यदि वहाँ कोई दर्पण न होता अर्थात कोई प्रतिबिम्ब न बनता, तो क्या उस व्यक्ति को कुछ लाभ होता. क्या दर्पण पर इसका कोई प्रभाव पड़ता है, कि उसमे प्रतिबिम्ब बने या ना बने?

उत्तर है, नहीं. यदि अनंत प्रतिबिम्ब भी बन जाएँ तो भी बिम्ब पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता. यदि एक भी दर्पण न हो अर्थात प्रतिबिम्ब की उत्पत्ति न हो, तो भी व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा. ना ही दर्पण पर कोई प्रभाव पड़ता है. यह सब जैसा है वैसा ही रहेगा. ईश्वर की तरह, यह पूरी सृष्टि भी शाश्वत है. अर्थात ईश्वर नित्य है, ईश्वर सत्य है और ईश्वर ज्ञानमय है, माया भी नित्य है, माया भी सत्य है लेकिन माया जड़ है. यही इन दोनों शाश्वत तत्त्वों का अंतर है.

इसी तरह यदि अनंत जीव बने या एक जीव बने या एक भी जीव न बने, इससे न तो महत तत्त्व पर कोई प्रभाव पड़ता है ना ही ईश्वर पर इसका कोई प्रभाव पड़ता है, जिसका प्रतिबिम्ब महत तत्त्व पर पड़ता है और वह प्रकाशित अथवा चेतन हो जाता है. महत तत्त्व अनंत अंशों में बंट कर अनंत सूक्ष्म शरीरों का निर्माण कर पाता है, और सभी अंशो में ईश्वर का प्रतिबिम्ब उपस्थित रहता है, जैसे अनंत दर्पणों में एक बिम्ब के अनंत प्रतिबिम्ब. इसलिए महत तत्त्व भी शाश्वत है.

अश्वथंम प्राहु र व्ययम्. अर्थात इस, लगातार परिवर्तन शील, सृष्टि, जिसकी उत्पत्ति हु ई है, यही इसका शास्वत रूप है अर्थात शाश्वत है.

अश्वथ पीपल के पेड़ का भी नाम है, लेकिन इस गंभीर चिंतन में, जब स्वयं ईश्वर ने कहा कि जिसे इसका ज्ञान हो जाता है, वह वेद ज्ञानी माना जाएगा. इसलिए पीपल के पेड़ को यहां नहीं लिया जा सकता.

इस सन्दर्भ में एक हास्य कथा भी है. एक बार एक महिला का विवाह जगदीश प्रसाद नाम के व्यक्ति से हो गया. अब, जैसे कि भारतीय संस्कार हैं, महिलाये अपने पति का नाम नहीं लेती, इसलिए उस महिला ने आरती की पहली लाइन में जगदीश की जगह, ओम जय प्रभु जी सहारे, बोलना शुरू कर दिया. इस तरह ईश्वर के प्रबोधन जगदीश अर्थात जगत के ईश, को अपने पति के सम्बोधन, नाम संज्ञा, से जोड़ दिया, जो कि उचित नहीं कहा जा सकता.

छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्

वेद के छह अंग हैं, इन अंगों के ज्ञान बिना वेदों का अध्ययन नहीं किया जा सकता.
छह वेदांग इस तरह हैं.

१), शिक्षा.

२), व्याकरणम्.

३), कल्पः.

४), निरुक्तम्

५), ज्योतिषम्.

६), छन्दः.

छंद सबसे आखिर व अंतिम अंग है, और यही सबका सार ज्ञान भी है सार अथवा वेद के शब्दों छंदो को किस तरह कि ध्वनि व स्वर से बोलना चाहिए. वेदों के छंद व उनके बोलने कि विधि, स्वर का अभ्यास आदि इसे बहु त गहरा और लगभग दु र्लभ बनाते हैं. बिना अति अभ्यास के, वह भी बाल्य अवस्था से, करने पर ही यह अभ्यास सिद्ध होता है.

ईश्वर ने यहां छन्दांसि शब्द प्रयुक्त किया है, इसका अर्थ वेद ही है.

अर्थात इस अश्वथ के पत्ते वेद हैं.

वेद का अर्थ ज्ञान होता है.

व्याकरण में विद ज्ञानि धातु है, जिसके, लट लकार धातु रूप कर्तरि प्रयोग में, इस तरह चलते हैं प्रथम पुरुष, वेद विदतुः विदुः, अथवा वेत्ति वित्तः विदन्ति.

और लट लकार धातु रूप कर्मणि प्रयोग आत्मनेपद में, विद्यते विद्यते विद्यन्ते. चलते हैं.

वेद शब्द रूप में प्रथम. :- वेदः, वेदौ, वेदाः, कि तरह चलते हैं. व्यापक ज्ञान के लिए विद सत्तायाम, ये धातु है, का प्रयोग होता है.

यह धातु रूप लकार आदि पांडित्य की बातें है, अब इस पांडित्य से आगे बढ़ते हैं.

वेद को यदि संज्ञा माना जाए तो जो चार वेद हैं, अर्थात ऋग्वेद, सामवेद, युजुर्वेदव अथर्ववेद, उनका सम्मलित नाम वेद कहा गया है.

यहां ईश्वर ने छंद का प्रयोग किया है वह ज्ञान रूप को ही किया है. इसीलिये ईश्वर ने आगे कहा कि जो इसे जान जाएगा, वह वेद ज्ञाता जाना जाएगा अर्थ बन जाएगा. ज्ञान के दो रूप अथवा प्रकार होते हैं. एक व्यापक ज्ञान और दूसरा प्रगट ज्ञान होता है.

व्यापक ज्ञान केवल ब्रह्म व् ईश्वर के पास है, उसका जीव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ना ही वह ज्ञान जीव के किसी काम आता है. जैसे लकड़ी में व्यापक अग्नि होती है. वह व्यापक अग्नि किसी काम नहीं नहीं होती. लेकिन जब वह अग्नि प्रकट हो जाती है, अर्थात जब लकड़ी में अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है तो वही संसार के लिए महत्वपूर्ण होती है. इस तरह केवल प्रकट ज्ञान ही जीव के काम आता है.

छन्दांसि यस्य पर्णानि, अर्थात ज्ञान जिसके पत्ते हैं, श्लोक के इस खंड का अर्थ है, इस बृक्ष के पत्ते ज्ञान है.

किसी भी वनस्पति को उसकी जड़, उसके तने अथवा उसके शाखाओं से नहीं जाना जा सकता, केवल पत्ते ही उसे वृक्ष के बारे में बताते हैं. जैसे आम के पेड़ का पत्ता, केले के पेड़ का पत्ता, जामुन के पेड़ का पत्ता. यदि आपको किसी पेड़ को पहचानना होता है तो आप केवल उसके पत्तों से ही पहचान पाते हो. फल तो उस पेड़ के नाम के अनुरूप होते है. जैसे जामुन के पेड़ में लगे फल जामुन ही कहलायेंगे, आम अथवा केले नहीं कहलायेंगे.

छन्दांसि यस्य पर्णानि, अर्थात ज्ञान रुपी जिसके पत्ते हैं, श्लोक के इस खंड का अर्थ है, इस वृक्षके पत्ते ज्ञान है.

एक बार एक अमीर आदमी ने अपने बगीचे में तोरी, घिये खीरे और तरबूज के बीजों की थालिया खरीद के लाया. वर्षा से भीगने के कारण, सब थैलियों से बीजों का नाम मिट गया और उस अमीर आदमी ने अपने हिसाब से उन थैलियों पर नाम लिख दिया और बीज बो दिए. लेकिन वह अब उसे नहीं पता था कि कौन से कोने में कौन से बीज बोये हैं लेकिन यह ज्ञान था कि वे बीज में तोरी, घिये खीरे और तरबूज के हैं. कुछ दिन बाद बीजों से अंकुर फूट गए और बेल बाहर दिखाई देने लगी. कुछ दिनों में सभी बेलें ५ ६ फ़ीट बढ़ गयी. एक दिन उसका किसान मित्र उसके घर आया, और उसने उन बेलों को देखा और बोला, अरे भाई तरबूज की बेल को घर के इतना नज़दीक क्यों ऊगा दिया.

वह अमीर आदमी हैरान हो गया, और बोला नहीं भाई ये तरबूज की बेल नहीं है, तोरी की बेल है.

किसान हंसने लगा, और बोला , हाँ भाई बोया तो आपने ही है . कुछ समय बीता बेल में फूल आने लगे और छोटे छोटे फल भी आये, तब अमीर आदमी को पता चला के वह तो सच में तरबूज की बेल है.

अब तत्त्व दृष्टि से विचार करें, वह अमीर व्यक्ति जिसके पास यह ज्ञान था कि वह बीज लाया है, उसने बीज बोये हैं, लेकिन प्रकट ज्ञान नहीं था, की किस के बीज हैं, वह नहीं जान पाया कि कौन सा फल मिलेगा, अर्थात वह वेद वित्त नहीं था. वह किसान जिसे प्रकट ज्ञान था, वह तुरंत पहचान गया कि यह पत्ते तरबूज की बेल के हैं, इसलिए उसने न केवल बेल को पहचान लिया बल्कि अपनी ज्ञान दृष्टि से उसके फलों अर्थात तरबूजों को भी देख लिया. अर्थात वह वेद वित्त है.इस तरह केवल पत्तों से ही वृक्षका पता चलता है.

उन ज्ञान रुपी पत्तों से पता चलता है कि, यह स्थूल जगत माया में स्थित लगातार परिवर्ति त होता जगत, में ईश्वर के ज्ञान रुपी बीज से ही सृष्टिमें ज्ञान उपजा है उसी के पत्तों के ज्ञान से ईश्वर का ज्ञान हो जाता है. सत्यम ज्ञानं अनंतं ब्रह्मः अर्थात सत रूप, ज्ञान रूप और अनंत केवल ईश्वर अथवा ब्रह्मः ही है. और यही ज्ञान जीव को ईश्वर के ज्ञान से परिचय करा सकता है.

ईश्वर ने कहा कि इस पेड़ के पत्ते ज्ञान अथवा वेद हैं. जिसे उन पत्तों का ज्ञान है, वह उस पेड़ और बेल का भी नाम जानता है, और उसके फल को भी अपने ज्ञान दृष्टि से देख लेता है. वही वेदवित्त है.

जो इस जगत को इस तरह से देख लेता है अथवा जान लेता है, वह ईश्वर के ज्ञान का ज्ञाता कहलाता है.

गीता के पन्द्रवें अध्याय के प्रथम श्लोक का पारमार्थिक अर्थ यही बताता है.